

हुने.
३६

मधुरवचनकहतभए॥यद्यपि
राधाजीविरहकरिअत्यंतरबीन
हे॥तोहनम्रहोइकरहईषायुक्त
॥खंडितानकेरससोतुमभीतर
भरेहोतहीरसबाहिरहवर्ततेहे
निश्चय॥तारसकेविरुद्धवचन
मूढेबोलिबोलितुमकोंउचितना
ही॥तुमतोबहुतसाधूभलेहो॥जा
तेआपगुणआरक्तअनुरागतदी
अत्वकोलोचनविषेंचुंबनकर
त॥ताकीनम्रतास्यांमकजलकुं

आपुने अधर पर धरत हे ॥ हे व
जाधीश ॥ २ ॥ और तुम्हारे अध
र विषे दंत क्षत पंक्ति नास्त्री यो क
रि सो दवी तो सर्वत्र कहि देत हे ॥ ३ ॥
अबही तुम्हारे भीतर निभरि अ
धिक्य ॥ तिन स्त्रीयोंके ध्यानते वा
हिर हू प्रगट भए हे ॥ नास्त्रीयोंके
कुचके कुंकुमकों बिंबमें बाहिर
हू देखत हूं ॥ तुम तो नाइकाई भए
॥ और ते नाइका तुमही होइ रहें हो
॥ नाकी आवसावधानी में नीलां

न.
७

बरपीतांबरकी ठोर पहनी आए
हो॥ सो कहै देतहें॥ तुमही हो ऊ एक
भए॥ तब मेरी अपेक्षां काहे कोहे
ताते तुमनाही स्त्रीनके अनुराग
ज्यों चार प्रहर रात्रिको तुमकों वि
लास करत करत तुमकों जगाए॥
सो अनुरागतुह्यारे नेत्र कमलमें
दिसवाई देतहो॥ ताकों तुम छिपायो
चाहतहो॥ ए मेरे आगे कहा छिपे॥
हे माधवमें मानहं जो तुह्यारे नेत्र
के तारेके बीच पुतरी हो॥ सो पूतरी

नहोइ॥ तोकों नहे॥ जाने घ्यानरात्रि
कों रिक्राएहें॥ याते तुम्हारे मलकमि
लनकरतहे॥ सोवाकुं छिपाइवेकूं
करतहो॥ तुमकों मेरो डर कहा॥ तु
मतो महासुरहो॥ तुम सब संग्राम
की जयके कर्ताहो॥ नाइकानकूं
जीतिक्षतादिक करि छोडेहो॥ सो
उप्रमुदालोकातीतहो॥ जिनें लि
ख्यो हे तुम्हारे उरस्थल विषे जय
पत्र॥ ई॥ यह नाइकाके नखक्षत
नहोंइ॥ तो कहाहे॥ अग्रवियोगकी

रु.न.
३८

आसंकाकरि तुक्षारे हरयमेषं
सहोद्वेकोदाररचोहे ॥ ७ ॥ तेना
कानुमविषं अत्यंतनमसहोइ ॥ ओ
नुममहावीरहो ॥ ओरतुक्षारे च
एविषं वाकोकुचकुं कुमआधो
लयेहो ॥ ताने पूर्णपुरुषो नमको
पनीयहो ॥ हमको मति देखा ॥ ओ न
हे वजेभा ॥ तुमअपनेरुदयमेअ
नुरुपअंत रबहनचेनहो ॥ सोता
को मसन्नकरो ॥ हमने तुमा रोम
नोरथपूर्णभयो ॥ ताने हे कमल

दीर्घरत्ननेन ॥ वाहीनाइ कामनो
रथकुं पूर्णकरेगी ॥ ८ ॥ तुममोसो
अवधीकीनीहनी ॥ जोया रात्रिको
आवेहीगे ॥ सोगात्रिअजहंभई
नहीं ॥ आअर्थकरिकहनहो ॥ जिकि
सोरअत्यंतनुमसाधुभएहो ॥ ए
गाइसमें विरहकरिदुखिनकहुं
तुक्षारीयहसाक्षान्तगाकीकपा
हनजोअवधिनंअगाऊआए
नोहंयाएनाथसरएहंनुमहुं
कहाकहं ॥ अथवानाहींजानतहं

जो अगें भाव हं कहा कहं ॥ अथवा
नाहीं जानत हं जो अगो भाव हं कहा
होनहा रहे ॥ विधाना नें मेरे अइ
ष्टमें कहा विचारो ॥ सो नो में नाहीं
जानत ॥ ठाकुर के सेहों कछु अइ
कपीत नयन ॥ और जभाई रगत
और प्रिया जूके बहुत भय करि ॥
रति रमण के चिह्न करि ॥ रमणा
दिक करि ॥ कजल रेखा ॥ पान पी
का इ नो तिलका जाव रेखा ॥ बिन
गुण माल ॥ पीठ कंकण ॥ पेच सि

थल ॥ इत्यादिक सर्वा चिह्न ॥ सब
गायन करिवे को अत्यंत उदार हें
॥ एताइ सठाकुर मुह्यादी मानसी
पीठाकुर समयो हो ॥ हे सरो जाक्षी
॥ ११ ॥ इति श्री पंचमोहजासचं
दूषीं ॥ ५ ॥ ॥ नदनंतर विरह दुः
खिन जे प्रिया जी ॥ ते अत्यंत व्याकु
ल रहे खिकरि ॥ ठाकुर प्रिया जी को
देखिके एसे चुप होइ के रहे हें ॥ फि
रके सीहे प्रिया जू ॥ कंदर्प के वाणा
करि खिन जरजरि नहो ॥ ठाकुर

गोकं र्परुपा ॥ सौं र्थमधुरपरश्र
 श्रयं जो ररस्यके लि ली ला ताशु
 आपुन हदयमंश कुर ध्यान करत
 हो ॥ सा धाज्पति । चतुर चूजामलि
 स रवी कहत भई ॥ हे स रवी राधे ॥ प
 हं भरो क लो वचन सुनो ॥ एरा
 कुर तुम प्रति अनुकूल हो ॥ एतादृश
 विषे नं मानमतिकरि ॥ उहां प्राणने
 ऊपे छ हो ॥ परि तुम विषे अत्यंत अनु
 राग हो ॥ उनकी पीतिके तुम व सी हो
 ॥ ताते हे मुग्धा ॥ सुंदर लोचनी ॥ हे

गोकं कवहं ॥ एतादृस उन्मत्त पीत
 मसो मानक दिवो उचि त हो ॥ न ही
 कीजे ॥ हे सरो जाक्षी ॥ हे दीर्घिने
 नी ॥ २ ॥ हे राधे मद सुगंध सीत
 लवा ध्रुव रहत हो ॥ गा विषे यह माधव
 लक्ष्मी पति हो ॥ परम पुरुष हे नाक
 रि परकी या रसत्व ही सुचि त की नो
 ॥ सो लक्ष्मी हं को ब्रां डिके अभिसार
 की ऊंच परदी को पाइ के जब एतु
 ह्यारे वन विषे आ ए ॥ तब त्रि लोकी
 मे क हायाते ऊपर और सु ख हे ना

ही॥ ने नो तं जानत हे॥ में नो सं कल
 कहं न था पि नु मा गी॥ सु भ ध्या र्थ
 हं॥ नो तं क ह नि हं॥ ३॥ हे श्री रा धे तु ल
 गी सो भा ग सी वा की म हि मा कुं वे र
 ह न ही जा न त॥ नो ओ र को न जा वे
 ॥ प रि जा मा ध व कूं चं द ओ र त्रै लो
 क स्त्री की अ द्या प लो॥ अ त्यं न आ तु
 र ना सो र वो ज न पि र त हं पा व न ना
 ही जो॥ सो षा कु र वि धे नो तं अ त्यं
 श्री नि क शि॥ ने रो आ स क हो इ नो सो
 अ धि मा र क रि र वो ज न र वो ज न

ने र व न में आ इ प ण प ति क र त हें
 ॥ ४॥ हे मु न्धे ए ना इ स वि र ह कुं पा
 व न हें॥ षं ग ही म द स र द न मि लि॥ ओ
 र आ पु ने वि र ह ता प कुं धो डि॥ अ
 व ओ र ही॥ आ पु ने जु ग लो च न क
 रि॥ षा कु र को र श्च नि क रि मु फ ल
 क रि ने न को॥ ५॥ हे मु न्धे॥ हे मु
 रा गी पि यो॥ में प हि ले व ह न वा र
 नो सं क लो॥ तं क व हं मा ध व सों
 गा ट मां न म नि क रो॥ प द्य पि नो सों
 म हा अ प रा ध की नो हो इ॥ नो हं अ

६२
६

वनमहोद। गाने अपना धस्यागकर
नो। सो बहुन आवस्यकहे। गाने क्ष
माकसि। निराननो वा विनु तो रथो
न परे गो। विनदे रवे प्राणहरीडा
होइगी। गाने अब अवसरहे। आ
यो माधो सो मिलि। ६। हे सखी कु
चकुं कुमके विचक्रं। तं लोचनके
नीरके प्रवाहकरिमति सी। चेरुद
नमतिकरो। काहेनें जो जानें याहं
कांमनहोइ। आग्नि नहोइ। तो कह
ते रहरयमे नो। प्राणप्रियाको। स

पन अनुगगवाहिरप्रगटभयोहे
सोसमायो नही। सो वाहिर उत्तदि
चल्योहे। सो लाल आग्नि नाही। जो
लोचनके नीरकरि बुजावनहो। ७।
॥ अब टाकरके सेहे ॥ जो अखंनको
मल चिह्नहो। और तुह्यागेनेकमां
न सहिवेकुं अशक्यहो। तो त्यागो
कहांने सहिसको। आधीयहो। गाने
कहा अवस्थाहोइ। गाने तुमकखो
जो ठाकरइहां आवे। आजादीनी
ओर तुम उदारहो। गाने मधुस

धुरजोबोलो ज्योवे श्रावे ॥ तुमपर
उदारहो ॥ उनकी ओर तुमारी प्र
नरहरो ॥ ८ ॥ यह इनने कालबच
प्रीतको परके भरकरि प्रसिद्धम
वनी जो श्रीप्रियाजू ॥ सो ऊंचे नि
स्वाम छोडन ॥ ओरको परकरि
पुने अधरको डमदे नहो ॥ नवरा
नदयेने ॥ कालविवने मानव
मिथुलभयो ॥ नवठा करने अव
सरपायो ॥ नवश्रीप्रियाजूविषे
ठाकरके अनुरागके भरकरि

रसकरि आइहहदयगुनका ॥ नाथ
चदकार प्रणपति वीचवीननी
केवचन ॥ श्रीप्रियाजूको परम
आनंदचंदनवदनी प्रणिनाथना
दुवचन कहत भए ॥ ९ ॥ हेसरसि
जनयने मोविषे न मानन जि
॥ ओर तुमको पर उचिन नही
जो मोपे करे दर्पके बाण छोडन हे
हे सुंदरी ॥ तुममोको भजो ॥ रुखु
हविचार मतिकरो ॥ नलनीवी
कुं पहिसो ॥ ओर धुं पर गुं गोक

श्री॥ हे शीतमनुमनि कुंजमें जाउ
 और मार्गकों छोडि॥ और तुम
 अपने अधरा मृत करि॥ मोक्ष
 दिनाप जो कंदर्पने रच्यो हे सो हू
 रिक सो॥ और तुम आपम धरव
 चन करि बोलि करि परम सुख
 कों विस्मयो॥ १०॥ कुच कुंभ मंग
 लकलसके आलिंगनें औरं भ
 की संभावना नही हे॥ आलीहं सो
 कों अत्यम सुख उपजावन हे॥ नो
 आलिंगन ही ये पाछें नो करजा

निच के सो सुख उपजे गो॥ नानें
 नुम आलिंगन कों कहा बिलंब कर
 न हो॥ ११॥ ठाकुर श्री प्रिया जू प्रति क
 हत हैं॥ जो मेरे सोऊ नेचक मलको
 तुझारे नून पूरि मासी कों जो प्रपं
 चमासे तुझा सो मुख चंद्रनाको कि
 रण निकरि मेरे लोचनक मलना
 करि नासकी प्रभाकरि॥ तुझारे वर
 न चंद्रपरि प्रतिबिंबित होइ गो अब
 ही कंदर्पके मंगलकलस हैं॥ जो जु
 गल कुच ना विषें नून न पञ्चवकी

पंक्ति शोभा मानकरिहे आली ॥ ना
कलस विषे ॥ मेरे करपल्लवरासि
मकरपत्रिका करवाओ ॥ ओभरा
ठोर जोरसकी स्थितिहे नहां अह
चंद्रकों धरनहे ॥ ना नें रस प्रगट
होइ गो ॥ १३ ॥ हे प्रणयनी यराधे
जो मुममो परको पीही हो ॥ तो चो
रासी वधादिक करि मो कों बांधि
रासि ॥ खंडन करो ॥ नख क्षमादि
करो ॥ मेनुखासो ज्ञपराधकी
योहे ॥ १४ ॥ हे प्रिये ॥ सुखासी भुक्त

दीरुप जे धनुष ॥ ना विषे रा ये हे
नेत्रकमल ना विषे कंदर्पके जो
बाण ॥ सो हे मुग्धे कला कों नको क
रेगी ॥ सो मो परकटाक्ष करि दे
खो ॥ १५ ॥ सर्व सुकरि सर्वात्म प्रभा
व करि मो सों नुम सों सर्व लहे की
नाही ॥ मेरो दुख तुमको व्यापे नु
मागे मो ह् व्यापे ॥ सो नत्व करि नि
शरि करो तो ॥ १६ ॥ मी या ज्ञपनिष्ठ
र करनहे ॥ जो तुखासो वचनाम
नरूपी भंजपट्टि करि ॥ ए मेरो

बहुतनापसमाशोहो। अन्यकार
नेंनसमेगो ॥ तानें विलंबको
जि ॥ विलंबनें विषचट्टिजायगे
॥ तोहेसखी पाछेनमिटेगो ॥
अथमीयाजूकों आसंकाभई
रनी ॥ जोतुझारेनेननमेंओ
ओरसुंदरीहो ॥ ताकोऊक्षरमें
रेहदयदेसविषेदेखो ॥ सर्वत्र
तुमहीआपि रहहो ॥ ओरको
ऊसुंदरीभरेहदयविषेमेवेसहे
इवेकोसक्यनाहीतुमहीहो ॥

तानेंतुममेरीउपास्यदेवनाहो
॥ तानेंसबआसंकाछोडक
रिहेमुग्धेसरोजाक्षी ॥ बहुतम
सन्नताकोमोविषेविस्तारो ॥ ओ
रमोननजो ॥ ओरविमुखवताह
कोंनजो ओरसनमुखहो ॥ आ
नंदिनहोइपधारो ॥ विलंबमनि
करो ॥ १५ ॥ प्रेमसखीवाताकर
नहो ॥ तोसखीआशिर्वादेनहे
चरनचरनदूरगईजोगाय ॥
गाकोंठाकरआपुनीमीनिकरि

रु.न.
६

५७

नीलमेघवाणींभीया ॥ नासंज्ञ
पनीवाहंपीतांवरफिराइहाप
उठाइगायनकोनामलेलेबुल
वतहो ॥ सोठाकुन श्रीराधेजुकेप
यउनकोवांछिनकरो अभिल
षपूर्णकरो ॥ १२ ॥ इति श्रीषष्टमे
हलाससंपूर्णो ॥ ६ ॥ ॥ अथ
सानमंडुगासविषे ॥ पहलीस
रवीइसरीप्रतिकहतहो ॥ जोयाप्र
कारभीयाजूसोठाकुननेंबहन
वीननीकरी ॥ महनंनरवीननी

केवचनमुनिश्रीयाजूक्योह
करिनेकस्मिनमुखभर्दी ॥ ठा
कुरनेंमनाए ॥ नाकरिमंदहा
ससदृशश्रीप्रियाजूभर्दी ॥ नव
पीयाजूप्रतिसरवीकहतहो ॥ १ ॥
हेराधेजेसीहंवलोकामेंको
सोभाग्यसीमंनिनंबवनीहे
नाही ॥ यानेंठाकुनयाप्रकार
प्रणयनिकरननेरे ॥ आधीन
होइरहेहो ॥ ठाकुनमनाइवेकुं
आएहो ॥ नानेंसोलहसिंगारका

गो॥ या प्रकार हे सुसुखी श्रीगण
जसो कहिकरि॥ आनंद युक्त हो
इक नि॥ बावना चंद्रनक सखी
गार॥ कपूर चोवा और सुगंध
लाइ॥ अरग जाकरि॥ सखी श्री
मीया जूको उबटनो करत भई
॥३॥ ना पाई के सरसो उबटनो
करत भई॥ पहिले सुगंधसो
मीडिके ना पाछे अकेले के स
रसो॥ और मीया जूके अंगवि
धेनो॥ सरजही अमोहही या

प्रकार एकी बान भई॥ ४॥ हा
एपीछे सखी चीर पहिनावन
भई॥ महादिव्यपट कुला॥ और
फुंदीके नावाके फुंदेनाकदि
के विषे ठाकुरको देखिवेको
दिनाइवेको अंगहेनुसारे॥
हेमोहनां॥ ५॥ हे भूच्या लंवा
सक्ष्महेक टिकाकी॥ ६॥ प्र
थमनी चेंतो विहुलनापरनी
लमेघनाके ऊपर स्थिरवीजु
शी॥ एसी प्रियाजूकी कंचुकी

हुं न.
४२

की सो भाहे ॥ ७ ॥ गौर अंग परसा
मकं चुकी पहि गाय करि चरु
चूडा मणि सरवी ने आगे भाषा
हो नहार हे ॥ सो सूचन काकी भा
॥ ८ ॥ सोवन जूथका चं बे ली अ
र मालनी के पुष्पकी सुंदर बं
गुहिक रि ॥ बेणी के प्रांन विषे स
रवी मुक्ता के गुड्यांकी च मरी ध
रत भर्दी ॥ ९ ॥ निरखी सुंदर क
सूरी की आड करि के सुंदर
मणि मालिक जटि न निल

क धरत भर्दी ॥ ता पाछे कुं न ल
चुनि ता विषे न्यारे न्यारे पुष्प
करत भर्दी ॥ १० ॥ मांग विषे नो
मुक्ता फल की कांति ॥ सो मुक्ता
फल की कांति नो न होइ ॥ नो क
हो ॥ गंगा जी हो ॥ हे सरवी ॥ एसा
मके सरवा सो तो न होइ ॥ नो क
हो ॥ ए श्री यमुनां जी हो ॥ हे स
रवी एसे इर की रेखा तो न होइ
नो क हो ॥ पाछे नें सर स्वनी
आई हो ॥ कंदर्प ने यह विवेणी

रचीहे ॥ काहेकों कामं जाके फल
 देवेकों नीर्थ राज ॥ विवेकी
 नीहे ॥ काहेनें जो नीर्थ राजसें
 करसं जांनिको सर्वमु नीथर
 एकत्र मिलनहे ॥ नहां वेणीमा
 धव मुनिस्वर श्रेष्ठहें ॥ श्री प्रीथ
 ज्को ध्यान धरिवे देहें ॥ नामुन
 को मिलनरूपी कामना निमि
 क्षकरपनें जे वेणी नीर्थरच्यो
 हे ॥ १२ ॥ सुवर्णकवनीयमालि
 करचरचिनि ॥ भांनि भांनिकें

आभरण मनकों रिजावे ॥ ए
 सेतरोणा आरक्त कमलके क
 रणफूलसो फूल नहोइ नोक
 हाहे ॥ कंदर्पके कामपयंनिवाण
 रं च्योहे ॥ १३ ॥ नित्य नंदकुमा
 रको स्वरूप और चरिनामुन
 और सुनि ॥ होऊ श्रवणसों क
 रिजाको अनुरागप्रगटभयो
 हे ॥ होऊ पुष्पनहोइ ॥ १४ ॥ सुदि
 का आदिकों लेकों ॥ नखसिख
 नेलेकों बजोटा नारवि विधि

आभरण प्रीयाजूकों पहिराई
 मृगनें नीकेनेत्र विषं सहस्र
 ज्वलरेखाकरनभई ॥ सो लोच
 नजुगनहोइ नोकहाहो ॥ कंदर्प
 केशो ऊवाणहो ॥ सो विधाने
 देहे रचेहो ॥ गानें जो भीनरजा
 यप्रसवहो ॥ सो बाहिरनाही आ
 वन ॥ १६ ॥ प्रीयाजूकों स्पामं
 जनही जोहो ॥ गानें जो भक्तकेने
 त्रविषं ही गुरु रंहीहो ॥ १७ ॥ चतु
 रसखीने प्रीयाजूकेनेत्रको र

सउषादिनचले ॥ गानें चतुरस
 र्वीने अंजनकीमें डवां थीपरि
 सहस्रधागहोइके प्रगटहोनभ
 यो ॥ अनेकभावकेसमूहसो ॥
 चंचलरदेहेकटाक्षसो ॥ संधि
 नचलें देहेहीचले ॥ रससो उव
 दिकें पूदिनिकसे ॥ १८ ॥ अंजन
 करिरंजिनकीये प्रीयाजूकेनेन
 नाकरिनो रंजन ॥ और कंदर्प
 गानें हेसखी ॥ एगाइसनेनखा
 रके हृदयमें रहनहे सदा ॥ ग

नैराश्रुं चंचलनविभक्ति
 रतहो ॥ १८ ॥ अब श्री श्री याजूकी
 सहचरी कह नहो ॥ जो आगे वल
 न करि वें कुं साकि हे परि नाहं क
 रनि हे ॥ काहे नै जो संग मकी क
 था को विलंब हो नहै गाने ॥ १९ ॥
 अब कहा लो कहियो ॥ भी याजूको
 वहन आभूषण पहिराई ॥ नाऊ
 पर फूलकी माला पहिरावन भ
 डी ॥ २० ॥ कंठ विषे रक्षम भी ह भ
 नर को नरोदा आनक पहिराई

करि ॥ ना पाछे ना बूझ क सूरी क
 पूर सहित आगे गावन भई ॥ २१ ॥
 नदनं तर सो रह सिंगा र करि द
 रण समर्थो ॥ नामें श्री श्री याजू
 आपुनो प्रति विव दे रिव प्रसन्न
 भए ॥ अनि सौं दय दे रिव कें ह राषि
 न होन भए ॥ दे रिव के लं जि न होन
 भई दृष्टि ॥ ओर थो डो सो मं दहा
 स कुं ह करन भई ॥ नव प्रीत्य सरव
 कहन भई सो कह नहो ॥ हे रा धे क
 मलदल पत्र सी तु म म धु म थ

७
दुःख
॥५३

नको अनुसरन करो ॥ हे सुसु
खी ठाकुरनें तुमकों प्रणिपति
वी नगीके वचन विषें बहुत हीन
की नो हो ॥ अब तुम्हारे निकुंज वि
षें प्राप्त भए हैं ॥ १ ॥ ठाकुरके सं
हें ॥ सारे जके रतन रूप हें
यनस्यां मकी आभा ॥ जे संक
सकों मिलि करि आपुनो रूप
कसुम फल करि हे ॥ हे सुंदरी रा
धे नंके सी हो ॥ विद्युत्त ना जे सी
हो ॥ सरूप नेयो और यन दा मि

नी मिलि के सो भाषा वन हो ॥ सो
नृहारो सरूप सुफल करो ॥ यह
मंद वायु हो ॥ सो तुमकों अनगुण
संमंति हो ॥ सो तुमकों ठाकुरके
संगमकों प्रेरन हो ॥ और सिद्धाह
करन हो ॥ जो अंधारी रात्रि हो ॥ अ
भिसारस मो हो ॥ जानें हरे हरे च
लो ॥ ३ ॥ यहको कि लाह तुमकों बु
लावन हो ॥ मधुर अव्यक्त वाणी क
रि करि ॥ कुहु कुहु अभावास्याकी
काशी रात्रि हो ॥ तुम आबो ॥ हे सखी

यह तुमकों उदार नर बुलावन
हो ॥ ४ ॥ नायक नाइका के दरयकों
विदारण वालो काम। नाने बाण
सांध्यो हो ॥ सो लो किक न होइ ॥ अ
लो किक अंधकार हो ॥ यह अंधका
र अभिसारिका को काम उद्दीप
कहे ॥ ५ ॥ पहिले अमावास्या की
अंधकार की अभिसार कहिके
अवजोत्तना अभिसार कहन हे
पूर्वमासी को भी याजू पधारन
हे। नव अंजन मिसर नाही कह

गा ॥ ६ ॥ उज्वल सिंगार पह विके
चलन हे ॥ तुम जो सिंगार पहि
रो सो सब सरवी ने जान्यो ॥ स
गं गकवच पहि विकंदर्प संग्या
मको उद्यम युक्त भए हो ॥ नाने
अवल ज्याइ डिठा कु र सो अ
भिसार करि आपु नो सर सह
दय करि जाओ ॥ ७ ॥ चरणार
विंदके धूपरु अरु कटि मे रव
ला ॥ ए हो ऊके शब्द करि ॥ दुंदुभि
व जायक हे ॥ रिरा धे नं मा धव

कोंटिदेनेंनके अंचल करि नें
 वान करि ठाकुर कों जी नि
 रके सेहें। सकु चिन अ धर अ
 र ऊं चे कों दृष्ट करि तो कों देर
 न हो। तुमके सी हो। लज्या करि
 तो अर्द्ध नी चो देखत और मु
 सक्याइ दृष्ट करि कछु कलजा
 कछु कभया। कछु क मंदहास्य
 कछु करषी नंद संव लिन भाव
 नी दृष्ट करी एनाइ सहोइ हो। स
 रवी ठाकुर कों म भाव च पल ॥

अच्युत तुल्य रेचुं व न उदाय
 ऊं चे करि। चिबुक न करो। यह
 सहचरी ने आशिर्वादि दी नो। अ
 व ठाकुर निकुंज विषे वेठे माग
 देखत हो। नहां प्रीयाजू आए ॥
 सो प्रीयायाजू की छुइ दां टिका
 को दां म। और कों नके सब आ
 भरनके नेज करि निकुंज द्वार
 विषे प्रका सहो न भयो। निकुंज
 में ठाकुर कों देखे। देखे के श्री
 प्रीयाजू लजा सहि नहें। ॥ हे